[A-20] Seat No. _____ No. of printed page : 01

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (Previous) (HINDI) External EXAMINATION
Thursday, 4th April 2019
10.00 a.m. to 1.00 p.m.
HIN-401. : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

कुल गुण : १००

प्र.१ **किन्हीं दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। (२०)

(क) जोग ढगौरी ब्रज न बिकै है।
यह ब्यौपार तिहारो ऊधो! ऐसोई फिरि जैहै।
जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहे।
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै?
मूरी के पातन के केना को मुक्ताहल दे है।
सूरदास प्रभु गुनहिं छाँड़ि कै को निर्गुन निरबैहै?

(ख) एक दिवस पून्यो तिथि आई। मानसरोदक चली नहाई।।
पद्मावति सब सखी बुलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई।।
कोई चंपा कोई कुंद सहेली। कोई सुकेत, करना, रस बेली।।
कोइ सु गुलाल सुदरसन राती। कोइ सो बकावरि-बकुचन भाँती।।

(ग) रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों-ज्यों निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अधानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै।।
एकहि जीव हुतौ सु तौ बार्‌यौ, सुजान-सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै, घनआनँद बावरी रीझि के हाथनि हारियै।।

(घ) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित-दुति होइ।।
तो पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी है उरबसी-समान।।

प्र.२ कबीर के काव्यगत वैशिष्ट्य को उजागर कीजिए। (२०)

अथवा

प्र.२ पद्मावत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्र.३ तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (२०)

अथवा

प्र.३ घनानंद के वियोग-वर्णन को सोदाहरण समझाइए।

प्र.४ भ्रमरगीत-सार की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (२०)

अथवा

प्र.४ बिहारी-काव्य में श्रृंगारिकता की चर्चा कीजिए।

प्र.५ **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए। (२०)

(क) पृथ्वीराज रासो
(ख) विद्यापति
(ग) सूर की काव्यभाषा
(घ) कबीर-काव्य में गुरु-महिमा